

डॉ. काइल डनहम, संरचना और धर्मशास्त्र

नीतिवचन, सत्र 2

© 2024 काइल डनहम और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की संरचना और धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में डॉ. काइल डनहम हैं। यह सत्र 2, उन्नत ज्ञान और सामाजिक अनुप्रयोग है।

अब हम अपने अगले भाग की ओर बढ़ रहे हैं, जो नीतिवचन की पुस्तक के शेष भाग पर नज़र डाल रहा है।

हमने यह देखकर शुरुआत की कि कैसे नीतिवचन की पुस्तक, मुझे लगता है, जानबूझकर इस तरह से व्यवस्थित की गई है कि एक अनुभवहीन युवा को बौद्धिक कठोरता के जटिल ज्ञान के अधिक से अधिक अनुप्रयोगों की ओर प्रेरित किया जा सके। और यह शुरू होता है और पुस्तक की प्रस्तावना में उल्लिखित है। और हमने पिछली बार देखा कि कैसे नीतिवचन की पुस्तक के पहले सात छंद उसके ज्ञान के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि यह धार्मिकता, न्याय और सत्यनिष्ठा के गुणों पर केंद्रित है। यह इसे सुलैमान की नीतिवचन और यहोवा के भय की ओर बढ़ने के रूप में प्रस्तुत करता है। अर्थात् यहोवा का भय मानना ज्ञान का आरम्भ है, परन्तु मूर्ख बुद्धि और ताड़ना को तुच्छ जानते हैं।

पिछली बार जब हमने प्रस्तावना, पुस्तक के पहले नौ अध्यायों को देखा था, तो मैंने तर्क दिया था कि ये अध्याय पिता के संरक्षण में घरेलू सेटिंग में युवा व्यक्ति के लिए प्राथमिक प्रशिक्षण व्यवस्था के रूप में कार्य करते हैं, जो महिला ज्ञान और अंतर्निहित ज्ञान के साथ होते हैं। युवा में चरित्र निर्माण के लिए माँ की आवाज़, क्योंकि वह स्वतंत्र वयस्कता की दहलीज पर चढ़ने वाला है और दुनिया के खतरों और मांगों को नेविगेट करने के लिए है क्योंकि वह नेतृत्व के अधिक से अधिक रूपों की आकांक्षा रखता है। और अब हम अगले चरण में जा रहे हैं। तो, सात ज्ञान संग्रह हैं और हमने पहले ज्ञान संग्रह को देखा, अध्याय एक से नौ तक।

और अब हम अगला ज्ञान संग्रह देखने जा रहे हैं, जो सोलोमन वन है। सुलैमान एक, मैंने मौलिक ज्ञान के रूप में रेखांकित किया है। अर्थात्, हम प्रारंभिक ज्ञान से मौलिक ज्ञान की ओर बढ़ रहे हैं।

वे कौन सी प्रमुख चीज़ें हैं जिनकी आवश्यकता है? यहां नीतिवचन 10:1 में एक उपशीर्षक है जो बताता है कि यह भी सुलैमान की बुद्धि के अंतर्गत एक खंड है। और यही कारण है कि इसे अक्सर सोलोमन वन कहा जाता है। इस संग्रह में हिब्रू में सोलोमन नाम के संख्यात्मक मान के बराबर 375 कहावतें भी हैं।

जैसे ही हम इस पर काम करते हैं, कई कनेक्शन प्रस्तावना की ओर और आगे अगले अनुभागों की ओर इशारा करते हैं। ये सूक्तियाँ हमें ज्ञान के मूलभूत दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। यहां अधिक ठोस उदाहरण और परिदृश्य हैं जो प्रस्तावना में बताए गए सिद्धांतों के लिए एक विकासशील सामाजिक संदर्भ प्रदान करते हैं।

और अक्सर इस अनुभाग को दो अनुभागों में विभाजित किया जाता है। इसमें दो भाग हैं जिनमें विरोधाभासी नीतिवचन शामिल हैं, जो अध्याय 10 से 15 में धर्मी बुद्धिमान बनाम दुष्ट मूर्ख के बीच अंतर करते हैं, और सिंथेटिक नीतिवचन, जो अध्याय 16 से 22 में भगवान की संप्रभुता और धर्मी बुद्धिमान राजा पर ध्यान केंद्रित करते हैं। अंतर यह है कि विरोधाभासी नीतिवचन का उपयोग किया जाता है ज्ञान साधक को सही प्रकार के व्यवहार और गलत प्रकार के व्यवहार और लोगों के साथ जुड़ने के लिए सही प्रकार के लोगों को सूचित करने के लिए विरोधाभासी रूप।

सिंथेटिक कहावतें इस मामले में थोड़ी अधिक परिष्कृत हैं कि वे एक निश्चित मानदंड को बढ़ाती हैं। तो, कहने का तात्पर्य यह है कि वे किसी विशेष विषय की अधिक समझ प्रदान करने के लिए एक आधार स्तर प्रदान करते हैं और फिर उसका एक प्रवर्धन करते हैं। यहां मिस्र के ज्ञान के साथ समानताएं हैं जो बताती हैं कि इसे एक ऐसे खंड के रूप में समझा गया होगा जो एक एकीकृत संग्रह है।

और अगले भाग में संदर्भ हैं, जो 22.17 में बुद्धिमानों की बातें हैं जो 1.6 में बुद्धिमानों की बातों को प्रतिध्वनित करती हैं। इसलिए, हम कुछ साहित्यिक संबंध देखते हैं जो पुस्तक के बारे में हमारी समझ को सूचित करते हैं। यहां, प्रस्तावना के अंत में महिलाओं की बुद्धि और मूर्खता के बीच का अंतर अध्याय 10 से 15 की विरोधाभासी कहावतों का अनुमान लगाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि सुलैमान 1 ए अध्याय 10 से 15 ज्ञान और मूर्खता की इन विरोधाभासी या द्विआधारी श्रेणियों पर ध्यान केंद्रित करता है।

क्रिस्टोफर एन्सबरी ने कहा है कि इन सूक्तियों में मानवकेंद्रित आयाम हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव अस्तित्व और अनुभव की चिंता राजशाही जैसी कुछ श्रेणियों से संबंधित है। युवा व्यक्ति राजशाही के बारे में कैसे सोचना शुरू करता है? और यह पुस्तक के बाद के चरणों में विकसित होगा और अधिक जटिलता की ओर बढ़ेगा।

समुदाय और परिवार और फिर धर्मकेंद्रित चिंताएँ या चिंताएँ भी हैं जो एक धार्मिक अभिविन्यास पर ध्यान केंद्रित करती हैं। इनमें कुछ प्रकार के चरित्रों के प्रति यहोवा का स्वभाव और जिन लोगों का वह समर्थन करता है और जिनकी वह निंदा करता है, उनके बीच अंतर शामिल है। और इसलिए, उस संदर्भ में, हम देखते हैं कि प्रस्तावना में संयोगवश पेश किए गए चरित्र प्रकार अब बड़े पैमाने पर विकसित हो गए हैं।

बाहरी महिला अब केंद्रबिंदु नहीं रही। उसे इस संग्रह के अंत में पुनः प्रस्तुत किया जाएगा। लेकिन हम दुनिया को बेहतर ढंग से समझने और उसके बारे में जानने की तैयारी की ओर बढ़ रहे हैं।

यहां उल्लेख करने योग्य चीजों में से एक पिता की बेटे को चेतावनी है और पिता और मां की बुद्धिमत्ता भाषणों के आरंभ से जुड़ी हुई है जहां पिता बेटे को अध्याय एक में अपने माता-पिता के निर्देशों को सुनने के लिए सलाह देता है और श्लोक आठ. यहां ज्ञान शब्दावली का भी उल्लेखनीय उपयोग है जो प्रस्तावना में पाए जाने वाली कुछ चिंताओं को प्रतिध्वनित करता है। प्रस्तावना के 10 भाषणों में हमें पुत्र, उपदेश, बुद्धि, ज्ञान, चतुराई, विवेक, उपदेश और आज्ञा जैसे शब्दों की पुनरावृत्ति मिलती है।

और इसलिए फिर से, जैसे-जैसे युवा व्यक्ति बढ़ता और विकसित होता है, इन तत्वों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। सुलैमान 1बी अध्याय 16 से 22 इन विषयों को बढ़ाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि, जैसे ही हम सुलैमान 1 के दूसरे भाग की ओर बढ़ते हैं, यह अधिक जटिल और सूक्ष्म चित्र प्रदान करके विषयों को बढ़ाता है।

यहां, दुनिया को उसकी चुनौतियों और जटिलताओं में अधिक देखा जाता है और नौसिखिया नेता बेहतर ढंग से समझता है कि इसके साथ आने वाले नुकसानों से कैसे निपटना है। यहां का ज्ञान निर्देश दैवीय शक्ति के मध्यस्थ के रूप में राजशाही से संबंधित विषयों का अधिक सूक्ष्म चित्र विकसित करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि, द्विआधारी दुनिया में राजशाही के बजाय, पहले खंड में, अधिक जटिलता है।

वह दैवीय शक्ति का मध्यस्थ है। समुदाय न केवल एक जगह बन जाता है जहां युवा व्यक्ति रहता है, बल्कि जहां उसे विवेकपूर्ण वित्तीय निर्णय लेने होते हैं। परिवार उस दायरे से आगे बढ़ता है जहां वह बढ़ रहा है और परिपक्व हो रहा है और एक ऐसे संदर्भ में विकसित हो रहा है जहां वह खुद वैवाहिक रिश्ते के संदर्भ में सद्भाव, शांति और न्याय की तलाश कर रहा है।

और यह जटिलता के एक बड़े आंदोलन का सुझाव देता है। यहां धर्मियों और पापियों के प्रति यहोवा के स्वभाव के बारे में भी धार्मिक चिंताएं हैं। लेकिन यहाँ न्याय, दैवीय सर्वज्ञता और दैवीय संप्रभुता पर अधिक ध्यान दिया गया है।

मुझे लगता है कि विलियम ब्राउन ने यह प्रदर्शित किया है कि इन दो खंडों में नीतिवचन कई क्षेत्रों में सरल से जटिल तक एक गतिशील आंदोलन प्रदर्शित करते हैं। ये पारिवारिक संबंधों से लेकर सामाजिक मित्रता तक, ठोस चरित्र प्रकारों से लेकर अमूर्त चरित्र गुणों तक, संस्कारित मौन से, यानी यह जानना कि कब चुप रहना है, वाकपटुता तक, जो सत्यनिष्ठा की विशेषता है, भाषण के सही प्रकार तक, निम्नलिखित पंक्तियों पर चलते हैं। और अलंकृत धार्मिकता से अधिक जटिल सामाजिक न्याय तक। कहने का तात्पर्य यह है कि टोरा के मानदंडों को एक ऐसे समाज के संदर्भ में कैसे मूर्त रूप दिया जाता है और कार्यान्वित किया जाता है जहां नेता को स्वयं यहोवा के चरित्र को ध्यान में रखते हुए न्याय करना चाहिए?

इसलिए, सुलैमान 1बी ज्ञान की सीमाओं, यहोवा को ज्ञान के सच्चे स्रोत के रूप में, और यहां तक कि ज्ञान और मूर्खता के अपवादों पर भी ध्यान केंद्रित करके अधिक परिष्कार प्रदान करता है, जो शुरू में सुलैमान 1ए के विरोधाभासों में पाया जा सकता है। तो, फिर से, यहाँ अभ्यास करने के लिए, सोलोमन 1 को दो भागों में विभाजित किया गया है। भाग एक विरोधाभासी नीतिवचन है जो बुद्धिमान धर्मियों और मूर्खों दुष्टों की तुलना करता है।

और यहाँ, ठोस उदाहरण और परिदृश्य हावी हैं। यहीं पर युवा व्यक्ति दुनिया में घटित होने वाली प्रकार की चीजों के बारे में सीखता है जिसकी वह आकांक्षा करता है। और वह ऐसे ठोस उदाहरण और परिदृश्य सीख रहा है जहां बुद्धिमत्ता से काम लिया जाता है।

और फिर भाग दो की ओर बढ़ते हुए, हमारे पास सिंथेटिक नीतिवचन हैं और ये ईश्वर की संप्रभुता और धर्मी बुद्धिमान राजा की भूमिका पर अधिक विविधता के साथ केंद्रित हैं। मैं कभी-कभी इसकी तुलना इस तथ्य से करता हूँ कि जब एक युवा व्यक्ति वयस्कों की दुनिया का अनुभव करना शुरू कर रहा है, तो उसे पहले सही प्रकार के लोगों के साथ जुड़ने, सही प्राधिकरण संरचना और दुनिया में नेविगेट करने के तरीके को समझना होगा ताकि वह आप बुद्धिमानी से और सफलतापूर्वक बढ़ रहे हैं और परिपक्व हो रहे हैं और ज्ञान को लागू कर रहे हैं। लेकिन जैसे-जैसे उसकी जटिलता बढ़ती है, आप अपने आस-पास के नेताओं के प्रकार, अपने रोजगार में काम करते समय आपके पास मौजूद बॉसों के प्रकार का अधिक सूक्ष्म चित्र प्राप्त करना शुरू कर देते हैं।

और इसलिए, ज्ञान के अनुप्रयोग में अधिक परिष्कृतता है। यह और अधिक जटिल हो जाता है। और इस प्रकार, आप यह देखना शुरू करते हैं कि मानवीय तत्व, परिपक्वता का हिस्सा है।

हमारे आस-पास की दुनिया और उसमें रहने वाले लोगों के प्रकार के बारे में अधिक सूक्ष्म समझ विकसित होने लगी है। यह जानते हुए कि एक युवा व्यक्ति अक्सर किसी चरित्र का मूल्य आंकता है। क्या वह व्यक्ति अच्छा है या बुरा? लेकिन जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं और परिपक्व होते हैं, हम समझते हैं कि इसमें कई बारीकियाँ और जटिलताएँ होती हैं।

और इसलिए, उस पर नेविगेट करना ज्ञान के अनुप्रयोग का अभिन्न अंग बन जाता है। तो, भाग दो अधिकार, धन और परिवार के संबंध में इसे और अधिक जटिल परिदृश्य देता है। यह जानना कि इन विभिन्न क्षेत्रों और संदर्भों में ज्ञान को कैसे लागू किया जाए।

अब, जैसा कि मैंने यहां देखा है, मुझे लगता है कि हमें इन कनेक्शनों, ज्ञान के इन संग्रहों के बीच ऐसे संकेत मिलते हैं कि उन्हें जानबूझकर एक साथ रखा गया है, दोनों पहले की सामग्री को दोहराने के लिए और पाठक को प्रेरित करने के लिए अगले चरण के लिए आगे। इसलिए, इन अनुभागों के उद्घाटन और समापन सीमा जानबूझकर व्यवस्थित सामग्री पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो सीखने वाले के लिए साइनपोस्ट हैं जो अपने दिमाग और अपने चरित्र में इन गुणों को विकसित करने के लिए इस सामग्री में महारत हासिल करने के लिए नेतृत्व करने की इच्छा रखते हैं। और इसलिए, जैसे ही हम अध्याय 10 श्लोक एक से आठ तक शुरू करते हैं, मुझे लगता है कि हम वहां पाते हैं कि ऋषि प्रस्तावना के शैक्षिक कार्यक्रम को जारी रखने का संकेत देते हैं।

वह अध्याय 10 के पहले आठ छंदों में ज्ञान की सफल खोज के अभिन्न अंग के रूप में धर्मियों और बुद्धिमानों के चारित्रिक गुणों पर ध्यान केंद्रित करता है। तो, अध्याय 10 के पहले आठ छंदों के भीतर, नीतिवचन दो, तीन, छह और सात छंदों में चार बार धर्मी का उल्लेख करते हैं, और 10, एक और आठ में दो बार बुद्धिमान पुत्र या हृदय का उल्लेख करते हैं। ये बाद वाली कथावर्तें मध्य छंद दो और तीन और छह और सात के साथ ज्ञान और मूर्खता की तुलना करके इकाई को तैयार करती हैं, जो धार्मिक और दुष्ट चरित्र प्रकारों के उदाहरण प्रदान करती हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि जैसे ही हम इसका एक साथ विश्लेषण करते हैं, सुलैमान 1 ए के शुरुआती सीमा में इन ज्ञान शब्दों का संयोजन ज्ञान निर्देश की वृद्धिशील वृद्धि का प्रतिनिधित्व

करता है, जो ज्ञान और सुधार से पाठ्यक्रम के साथ आगे बढ़ता है, जिसे हमने धार्मिकता की प्रस्तावना में देखा था और अध्याय एक श्लोक तीन और पाँच में बुद्धिमान व्यक्ति का सन्निहित चरित्र। यह व्यक्तिगत बुद्धिमान व्यक्ति, हिब्रू शब्द हकम, साथ ही बहुवचन बुद्धिमान, इस खंड में उल्लेखनीय पात्र बन गए हैं। पुस्तक में 30 में से 17 बार इस खंड में एकवचन बुद्धिमान व्यक्ति दिखाई देता है।

सोलोमन 1ए में इस व्यक्ति की नौ उपस्थिति हैं और सोलोमन 1बी में आठ उपस्थिति हैं। केवल इस संग्रह में, बुद्धिमान पुत्र को बुद्धिमान व्यक्ति के उपसमूह के रूप में दर्शाया गया है। अध्याय 10, 11, और 16 में हृदय की बुद्धिमानी भी दिखाई देती है।

और बहुवचन बुद्धिमानों की उपस्थिति भी यहाँ सबसे अधिक सुसंगत है। पुस्तक में इस शब्द की 17 में से 10 घटनाएँ हैं, जो सोलोमन 1ए में एक अपवाद को छोड़कर केंद्रित हैं। इसलिए, बुद्धिमान आम तौर पर कुछ प्रकार के व्यवहार, विवेकपूर्ण भाषण और ग्रहणशील सुनने में लगे होते हैं, और यह उन विभिन्न तरीकों से सामने आता है जिनमें बुद्धिमानों को प्रस्तुत किया जाता है।

हम कोलोकेटेड शब्द का उपयोग उन प्रकार के शब्दों के अर्थ के लिए करते हैं जिनसे बुद्धिमान जुड़े हुए हैं। और वे अध्याय 12 और 15 में जीभ और अध्याय 14 और 15 में होंठ जैसी चीजों से जुड़े हुए हैं। बुद्धिमान द्वारपाल और ज्ञान के प्रसार के रूप में कार्य करते हैं, इस प्रकार के साथी जो युवा व्यक्ति को इस अंतिम चरण में तलाशने होते हैं स्वतंत्र वयस्कता में बढ़ने का।

तो, यह सोलोमन 1 की शुरुआत है और बुद्धिमानों के इस चरित्र प्रकार पर केंद्रित है। इसका निष्कर्ष सोलोमन 1 20 से 11 में राजा और 20 से 12 में ज्ञान के दिव्य दायरे के संदर्भ के साथ समाप्त होता है। इसके अलावा, यह 20 से 15 में सुधार पर ध्यान देने के महत्व पर केंद्रित है।

ये सूक्तियाँ इस साहित्यिक धारा को समाप्त करने का कार्य करती हैं। वे आकांक्षी ऋषि को सत्ता का सम्मान करने की याद दिलाते हैं, जो अब घर से महल तक पहुंच गई है। इसलिए, पिता के सामने और केंद्र में होने के बजाय, अब राजा अधिक प्रमुख भूमिका निभाने लगा है।

नौसिखिया अधिकारी सुधार दिए जाने पर उस पर ध्यान देकर उचित आत्म-अनुशासन में महारत हासिल कर लेगा। इस प्रकार की आत्म-निपुणता स्वयं यहोवा से अधिक ज्ञान पैदा करेगी, जो 20 से 12 में इष्ट ज्ञान साधक के लिए ज्ञान के प्रसार की देखरेख करते हैं। इसलिए, प्रस्तावना के प्रारंभिक उद्देश्य दोहराए गए हैं, और यहां शुरुआती ऋषि को दोहराया गया है, नौसिखिया ऋषि जैसे-जैसे ज्ञान के चरणों में आगे बढ़ता है।

यहां, ज्ञान निर्देश संतों को ठोस बनाता है। वे भौतिक रूप में सन्निहित हैं और वे व्यवहार और निर्णय लेने के प्रकार और पैटर्न का उदाहरण देते हैं जिनका बुद्धिमान बनने की चाह रखने वाले उभरते युवाओं को अनुकरण करना चाहिए। और इसलिए, जैसे-जैसे वह इससे आगे बढ़ता है, उसका सामना इस द्विआधारी दुनिया से होता है जो जटिलता की ओर बढ़ती है।

उन्हें बुद्धिमानों के इस चरित्र प्रकार पर ध्यान केंद्रित करना है जो ज्ञान के द्वारपाल और प्रसारक हैं। उन्हें उनका अनुकरण करना है और उनके साथ जुड़ना है। और जैसे ही वह दूसरे खंड की ओर बढ़ता है, तब ध्यान सामाजिक प्रकार के रिश्तों पर केंद्रित हो जाता है।

राजा अधिक प्रमुख हो जाता है और ध्यान फिर से इस बात पर होता है कि व्यापक दुनिया में उसे किस प्रकार के प्राधिकार का सामना करना पड़ेगा और उन प्रकार के नेतृत्व और उनके साथ आने वाले नुकसानों से कैसे बेहतर तरीके से निपटा जा सकता है। इसलिए, मैंने यहां रास्ते में कई चीजें नोट की हैं। बुद्धिमान प्रमुख सामाजिक समूह हैं।

वे ज्ञान के द्वारपाल और साथी हैं, ऐसे लोग जिन्हें युवा व्यक्ति को खोजना और उनका अनुकरण करना चाहिए। परिवार से बाहर की ओर विभिन्न प्रकार के सामाजिक रिश्तों की ओर एक गति है। इसलिए, युवा व्यक्ति को इन बुद्धिमानों के बारे में सीखना होगा और उनके व्यवहार का अनुकरण करना होगा क्योंकि वह एक अधिक जटिल और सूक्ष्म दुनिया में आगे बढ़ता है ताकि वह समझ सके कि किस प्रकार के लोगों से उसका सामना होगा।

और फिर हम इस खंड के बाद दूसरे खंड की ओर बढ़ते हैं जिसका शीर्षक 22:17 में बुद्धिमानों के कथनों के रूप में दिया गया है। पाठ यह कहते हुए शुरू होता है, कि ये भी बुद्धिमानों की बातें हैं। और ऐसे कई कारण हैं कि यह संभवतः एक साहित्यिक उपशीर्षक के रूप में कार्य करता है, जिससे एक नया विमर्श बनता है।

सबसे पहले, हमारे पास बुद्धिमानों की बातें हैं, जो प्रस्तावना तक पहुँचती हैं। हमने चर्चा की थी कि कैसे अध्याय एक के छंद छह की प्रस्तावना ज्ञान की उन श्रेणियों में से एक को बताती है जिसे युवा व्यक्ति को बुद्धिमानों के कथन के रूप में अपनाना चाहिए। और अब हम पुस्तक को एक उद्देश्य देने के लिए 22:17 में इसे मूर्त रूप देते हुए पाते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि ये ऋषि-मुनि जो बुद्धिमान हैं, वे यह कह रहे हैं कि युवा व्यक्ति को अपने जीवन में इसे अपनाना चाहिए। और यह प्रस्तावना का एक मुख्य कारण बताता है। हम दूसरी बात यह भी देखते हैं कि शैली, निर्देश का प्रकार यहां पेरिनेटिक प्रवचन में बदल जाता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि चेतावनी, आदेश और निर्देश के बजाय केवल दो-पंक्ति वाली कहावतें जो अध्याय 10 से 22 तक की विशेषता बताती हैं। इस खंड में 46 आदेश दिए गए हैं और उनमें से दो-तिहाई निषेध हैं। और इसलिए, युवा व्यक्ति को अब सोलोमन 1 की कमोबेश द्विआधारी सूक्तियों से परे व्यवहार संबंधी सोच और कुछ चीजों के प्रति दृष्टिकोण को अनुरूप बनाने का निर्देश दिया जा रहा है।

हम इसे लगभग अब देख सकते हैं क्योंकि युवा व्यक्ति जटिलता के अगले क्षेत्र में चला जाता है जहां अधिक दृश्यता है, जहां अधिक सार्वजनिक नेतृत्व है। उसे पहले यह निर्देश दिया जाना चाहिए कि क्या नहीं करना है। और इसलिए, हम यहां इन आदेशों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिन्हें युवा व्यक्ति को करने से बचना चाहिए।

तो, ज्ञान संरक्षण पिता से संतों तक, घर से शाही दरबार तक चलता है। और अब यह एक महानगरीय स्वाद से रंग गया है, हम कह सकते हैं। मुझे लगता है कि इसका एक और कारण यह है कि एक और खंड यह है कि इसका अपना परिचय है।

यह 22:17 से 21 में अपनी स्वयं की प्रस्तावना के साथ खुलता है, जिसमें एक औपचारिक उपदेश और प्रेरणा के बाद निर्देशों के लिए एक उद्देश्य और संबोधक की पहचान शामिल है। इसलिए, अगर हम इस पाठ को देखें, तो यह कहने से शुरू होता है, अपना कान झुकाओ और बुद्धिमानों के शब्द सुनो, मेरे ज्ञान पर अपना दिल लगाओ क्योंकि अगर वे सभी तैयार हैं तो उन्हें अपने पास रखें तो यह सुखद होगा आपके होठों पर। और यह कहता है, कि तेरा भरोसा यही पर बना रहे।

मैंने उन्हें आज तुम्हें बता दिया है, यहाँ तक कि तुम्हें भी। क्या मैं ने तुम्हारे लिये सम्मति और ज्ञान की तीस बातें नहीं लिखीं, कि तुम जान लो कि क्या ठीक और सच्चा है, कि तुम अपने भेजनेवालों को सच्चा उत्तर दे सको? तो, इसकी अपनी संरचना है, जो बताती है कि यह एक अलग खंड है।

और फिर चौथा, इस नए अनुभाग का कारण यह है कि इस निर्देशात्मक व्यवस्था की पहचान उन लोगों को रिटर्न प्रदान करने का वादा करती है जिन्होंने आपको 22.21 में भेजा था। इससे पता चलता है कि यहां हमारे पास नए सामाजिक-राजनीतिक नेताओं के लिए विशेष प्रशिक्षण का एक उप-भाग है, जिन्हें रॉयल कोर्ट के नियमों और शिष्टाचार में प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। वे ही नेता की अगली उभरती हुई पीढ़ी होंगे। और इसलिए, उन्हें उन लोगों को एक रिपोर्ट देनी होगी जिन्होंने उन्हें भेजा था।

इसलिए, उन्हें शाही दरबार में शिष्टाचार और व्यवहार की प्रकृति को समझना होगा। हमने अन्य स्थानों पर देखा है कि यह मिस्र के कुछ लेखकों से भी कुछ समानता रखता है, जैसे कि अमेनेमोप का निर्देश। और मुझे लगता है कि यह इस तथ्य पर केंद्रित है कि यहां बुद्धिमान लोग एक बहुत प्रमुख समूह बन गए हैं।

हमने नोट किया कि बुद्धिमान लोग पुस्तक में 17 बार आते हैं और वे अंतिम खंड में बार-बार आते हैं। और अब वे इस अनुभाग में महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे इस इकाई, ज्ञान के इस संग्रह का नेतृत्व करते हैं। 22:17 में, यह बुद्धिमानों की बातें हैं।

और अगले भाग 24:23 में हम इसे एक साहित्यिक शीर्षक के रूप में भी देखते हैं। और इसलिए, उन्हें एक समूह के रूप में ज्ञान की तलाश करनी है। बुद्धिमान सुलैमान 1 में उचित प्रकार के व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं। और अब वे महत्वाकांक्षी ऋषि के निर्माण के लिए प्रशिक्षण सामग्री प्रदान करके ज्ञान को और अधिक स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं।

और यहाँ उनकी चेतावनियाँ युवा आवेग की संभावित ज्यादतियों को सुधारने का काम करती हैं। वे आधिकारिक नेतृत्व के संदर्भ में पवित्र व्यावसायिक ज्ञान के लिए आधार प्रदान करते हैं। विशेष रूप से, यह खंड राजा के प्रति उचित दृष्टिकोण और कार्यों और शाही सेवा की मांगों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए आवश्यक कौशल पर केंद्रित है।

और इसलिए फिर से, ध्यान उस युवा व्यक्ति पर है जो रॉयल कोर्ट में रहने और काम करने के लिए तैयार है और सबसे अच्छी तरह से जानता है कि रॉयल कोर्ट में जीवन के साथ आने वाले विशिष्ट प्रोटोकॉल मांगों और खतरों से कैसे निपटना है। जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, यह हर मोड़ पर संभावित खतरे से भरा था। और इसलिए, बुद्धिमान व्यक्ति को शाही दरबार में प्रवेश करते समय इन गुणों को अपने अंदर समाहित करने की आवश्यकता थी ताकि वह जान सके कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

और इसलिए, कुछ चीजें उसकी विशेषताएँ थीं। और मुझे लगता है कि हम इसे वैसे ही देखते हैं जैसे हम पुस्तक के भीतर के ज्ञान को देखते हैं। उभरते नेता की एक बात यह है कि वह ऐसे कार्यों से बचें जो आम लोगों को क्रोधित करें, अपमानित करें या उनका शोषण करें।

उसे गरीबों को कुचलना नहीं है, सीमा पत्थर नहीं हटाना है, या धर्मियों की संपत्ति पर हमला नहीं करना है। इसलिए, उन्हें ऐसे काम करने होंगे जो सामाजिक-राजनीतिक नेतृत्व के संदर्भ में सामाजिक न्याय को प्रदर्शित करें। उसे ऐसे काम नहीं करने चाहिए जो गरीबों, वंचितों या समाज में संघर्ष कर रहे लोगों को कुचल दें।

वह उन्हें न्याय, दया दिखाना चाहता है, और गलत प्रकार के लोगों से दोस्ती करने से भी बचना चाहता है। इस खंड में कुछ विशेष प्रकार के लोगों का चित्रण किया गया है। जो क्रोधी, कंजूस, मूर्ख तथा भोगी होते हैं।

और युवा व्यक्ति के लिए ऐसे लोगों के साथ जुड़ने का प्रलोभन होगा जो शक्तिशाली प्रतीत हो सकते हैं, जो आगे बढ़ने के लिए प्रवेश बिंदु प्रदान करते प्रतीत हो सकते हैं। और इसलिए, इस खंड में युवा व्यक्ति को उन चरित्र प्रकारों से बचने की सलाह दी जाती है, जो विनाशकारी परिणामों की ओर ले जाएंगे। जिनकी विशेषता क्रोध, मूर्खता और आत्म-भोग है, क्योंकि इस प्रकार का व्यवहार युवा व्यक्ति को नष्ट कर देगा।

बस कुछ और बातें। उसे परमेश्वर और राजा से डरना चाहिए। उसे विशेष रूप से भगवान और राजा के प्रति सही प्रकार की श्रद्धा पर ध्यान केंद्रित करना है, लेकिन साथ ही जो सही है वह करना है, शत्रुता के बावजूद भी, जो सही है उसे करने का नैतिक साहस रखना है।

जिसे हम इस अनुभाग के अंत में देखेंगे। वह उनको बचाए जो घात के लिये ले जाए जा रहे हैं, और जो ठोकर खाकर घात के लिये जा रहे हैं उनको रोके। यदि तुम कहते हो, देखो, हम यह नहीं जानते थे, तो क्या मन को तौलनेवाला नहीं जानता? क्या वह नहीं जानता, जो तेरे प्राण पर पहरा रखता है? और वह मनुष्य को उसके काम के अनुसार बदला न देगा।

और इसलिए, उसे अधिकारियों के प्रति श्रद्धा दिखानी है, लेकिन उसे ऐसे काम भी करने हैं जिनके लिए न्याय और अखंडता और उन सभी चीजों के संदर्भ में नैतिक साहस की आवश्यकता होती है। और इसलिए, ये सभी उस ज्ञान का हिस्सा हैं जो उसके सीखने के इस चरण में होना चाहिए। जैसा कि हम इसके माध्यम से आगे बढ़ रहे हैं, हम यह देख रहे हैं कि संग्रह के बीच विशेष रूप से सीमा या बीच के कनेक्शन इस प्रशिक्षण व्यवस्था को कैसे आगे बढ़ाते हैं।

और मुझे लगता है कि हम इसे इस विशेष खंड में भी देखते हैं। प्रस्तावना धार्मिकता, न्याय और अखंडता पर केंद्रित थी। और वे चिंताएँ बुद्धिमान एक और दो की कही बातों के आरंभ और समापन पर गूँजती हैं।

इसलिए, परिचयात्मक प्रस्तावना और बुद्धिमान व्यक्ति के कथनों का पालन करते हुए, यह परिचय गरीबों के साथ उचित व्यवहार के निर्देश के साथ शुरू होता है। गरीबों के साथ कैसा व्यवहार किया जाए? और यहां न्याय का विषय प्रमुख है। सलाह में सुरक्षा प्रतिज्ञाओं से बचने से लेकर प्राचीन सीमा चिह्नों को विस्थापित करने से बचने तक की सलाह शामिल है।

ये उन लोगों की परंपराओं और अधिकारों को संरक्षित करने के संदर्भ हैं जिनका समाज में शोषण, उत्पीड़न और दुर्व्यवहार किया जाता है। और इसलिए, बल्कि सही प्रकार का नेता जिसने टोरा के मानदंडों को अपनाया, वह था गरीबों के प्रति भी न्याय, धार्मिकता और ईमानदारी दिखाना। यह खंड 24, 15, और 16 में धर्मी व्यक्ति के संदर्भ के साथ समाप्त होता है, जो नेतृत्व की स्थिति में प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करता है।

यह समझते हुए कि सामाजिक नेतृत्व के लिए बहुत अधिक क्षमता और बहुत अधिक दृढ़ता की आवश्यकता होती है, उन्होंने इन पंक्तियों के साथ प्रोत्साहित और प्रोत्साहित किया है। भाग एक के अंत में राजा उस व्यक्ति के रूप में प्रकट होता है जिसे यहोवा के साथ डरना चाहिए। और यह 9.10 में प्रस्तावना के समापन, यहोवा के भय को प्रतिध्वनित करता है।

और यह पुस्तक के समापन की आशा करता है जहां यहोवा के भय पर फिर से जोर दिया गया है। दूसरा खंड, 24:23, बुद्धिमानों की दूसरी बातें भी न्याय और धार्मिकता के संदर्भ में खुलती हैं। इस बार नकारात्मक उदाहरण के माध्यम से, पहले खंड की चेतावनियों में कुछ हद तक जटिलता जोड़ी गई है।

तो, सुलैमान 1 की तरह, बुद्धिमान 2 की बातें भी 24.32 में ऋषि के गठन में सुधार के महत्व के संकेत के साथ समाप्त होती हैं, कि सुधार उसके विकास का एक आवश्यक हिस्सा है। यहां, सुधार एक नकारात्मक उदाहरण कहानी से उभरता है जो एक आलसी, एक आलसी व्यक्ति पर केंद्रित है जो मूर्खतापूर्ण प्रवृत्ति प्रदर्शित करता है। और जो युवा ज्ञान में आगे बढ़ रहा है, उसे इन प्रवृत्तियों से बचना चाहिए।

और इसलिए, फिर से, बुद्धिमानों की बातें युवा व्यक्ति को शाही दरबार में इस समारोह के लिए तैयार करती हैं। उन्होंने अगले भाग, सुलैमान 2 के लिए भी मंच तैयार किया, जो राजा के व्यक्तित्व, उस नेता द्वारा प्रदर्शित व्यवहार के प्रकार और युवा व्यक्ति को उससे कैसे निपटना है, इस पर और भी अधिक ध्यान केंद्रित करेगा। इसलिए, जैसे ही हम सुलैमान 2, अध्याय 25 और पद 1 की ओर बढ़ते हैं, हमें इस खंड के लिए एक और सुराग मिलता है।

इसमें कहा गया है, ये सुलैमान के नीतिवचन भी हैं, जिनकी नकल यहूदा के राजा हिजकिय्याह के लोग करते थे। और यहां हमारे पास दूसरा सोलोमन खंड है और मैंने इस खंड का शीर्षक रखा है, उन्नत बुद्धि, उन्नत बुद्धि। तो, हम प्रारंभिक ज्ञान से मौलिक ज्ञान की ओर बढ़ते हैं।

और फिर हमने बुद्धिमानों की बातों के साथ मध्यवर्ती ज्ञान को देखा है, और अब हम उन्नत ज्ञान पर आते हैं। वह ज्ञान का दूसरा स्तर है। और यह खंड शाही दरबार के मामलों से संबंधित सलाह का सबसे गहन संग्रह प्रस्तुत करता है।

यह खंड अपने साहित्यिक शीर्षक और दो उप-इकाइयों में इसकी संभावित व्यवस्था में सोलोमन 1 से समानता रखता है। तो, हमें सुलैमान 2 में दो खंड मिलते हैं, जैसा कि सुलैमान 1 में था। याद रखें कि सुलैमान 1 को अध्याय 10 से 15 और 16 से 22 में विभाजित किया गया है। और हम यहाँ भी इसी तरह देखते हैं, दो खंडों में, अध्याय 25 से 27 और अध्याय 28 29 के माध्यम से।

और इसलिए, यह खंड प्रतीकात्मक कहावतों से शुरू होता है जो शाही संदर्भ में उचित आचरण को रेखांकित करता है और विपरीत कहावतों के साथ समाप्त होता है जो शाही अदालत के संदर्भ में न्याय और टोरा पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह बाद वाला खंड विरोधाभासी नीतिवचनों के संकलन को फिर से प्रस्तुत करता है, दो सोलोमोनिक संग्रहों को पूर्ण चक्र में लाता है और पहले संग्रह पर लूप को बंद करता है। उदाहरण के लिए, राजा के पहले उल्लेखों के विपरीत, जो हमें सुलैमान 1 अध्याय 14, 16, और 22 में, या अध्याय 24 में बुद्धिमानों की बातों में मिलते हैं, यह खंड राजा को एक दोषपूर्ण व्यक्ति, एक त्रुटिपूर्ण व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है। नेता, जो न्याय को विकृत करने के लिए उत्तरदायी है और जिसमें अक्सर आत्म-संयम की कमी होती है।

वह अक्सर सत्ता से भ्रष्ट हो जाता है और उसका भ्रष्टाचार उसकी नेतृत्व करने की क्षमता को प्रभावित करता है। जैसे-जैसे नीतिवचन का निहित अभिभाषक इन ज्ञान चरणों के माध्यम से क्रमिक रूप से आगे बढ़ता है, वह अब अपनी प्रारंभिक नेतृत्व भूमिका को राजा के करीब केंद्रित करने के लिए तैयार हो जाता है और इस प्रकार शासक की कमियों का निरीक्षण और आलोचना करने के करीब खड़ा हो जाता है। जर्नल लेख में जिसका मैंने पहले व्याख्यान में उल्लेख किया था, यह शिक्षण एक जर्नल लेख पर आधारित है जो 2019 में बाइबिल रिसर्च के लिए बुलेटिन, खंड तीन में सामने आया था।

इसमें, मेरे पास एक तालिका शामिल है जो इस खंड में कई नीतिवचन दिखाती है जो राजा को त्रुटिपूर्ण, भ्रष्टाचार के लिए उत्तरदायी, और न्याय के गर्भपात के लिए उत्तरदायी के रूप में प्रस्तुत करती है। और इसलिए, राजा को अधिक जटिल और सूक्ष्म तरीके से समझा जाना चाहिए, हाँ, एक नेता जो दैवीय शक्ति और सर्वोच्चता को दर्शाता है, लेकिन साथ ही वह जिसे सही प्रकार से डरना और समझना चाहिए ताकि वह सफलतापूर्वक आगे बढ़ सके। उसकी उपस्थिति. और इसलिए, इस दूसरे खंड में, धार्मिकता, न्याय और सत्यनिष्ठा पर जोर भी सामने आता है।

इसलिए, जैसे-जैसे हम आगे बढ़े हैं, मैंने उल्लेख किया है कि कैसे इन अनुभागों की धाराएँ इस शैक्षिक कार्यक्रम को आगे बढ़ाती हैं। हम इसे सुलैमान 2 के इस खंड में भी देखते हैं। सुलैमान 2 में, प्रस्तावना का शैक्षिक कार्यक्रम अपने समापन चरण की ओर बढ़ता है। इसलिए, मैंने प्रस्तावना में उल्लेख किया था कि जैसे-जैसे हम ज्ञान शब्दों की श्रृंखला के माध्यम से आगे बढ़ते हैं, हम ज्ञान और सुधार, सरल प्रकार के द्विआधारी ज्ञान शब्दों से अधिक जटिलता की ओर बढ़ते हैं।

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, हमें बुद्धिमानों की बातें और नीतिवचन जैसे शब्द दिखाई देते हैं, और इसका फिर से अध्याय एक के छंद छह में उल्लेख किया गया है। और इसलिए, हम यहां फिर से सूक्तियों या कहावतों की ओर लौटते हुए देखते हैं। राजा पर फोकस प्रमुख है।

राजा शब्द का उल्लेख शीर्षक में और 25, 1 से 3, और 5 से 6 की प्रारंभिक नीतिवचन में पांच बार किया गया है। इस खंड में अन्य स्थानों पर, हम राष्ट्र पर शासन करने वाले अधिकारियों के लिए उपयोग किए गए अन्य शब्दों को देखते हैं। इनमें 28, 15, 29, 2, 12 और 16 में शासक, 28, 16 में राजकुमार और 28, 2 में सेनापति जैसे शब्द शामिल हैं। इसलिए फिर से, नेतृत्व पर ध्यान केंद्रित किया गया है। प्रस्तावना की धार्मिकता, न्याय और सत्यनिष्ठा का अभिसरण यहाँ सुलैमान 2 के सीमों में उल्लेखनीय है, विशेष रूप से शाही दरबार के संबंध में।

विशेष रूप से धार्मिकता एक ऐसा गुण है जो 25,5 में इस खंड की शुरुआत में राजा के सिंहासन को स्थापित करता है, जो कहता है, दुष्टों को राजा की उपस्थिति से दूर कर दो और उसका सिंहासन धार्मिकता में स्थापित हो जाएगा। तो ये चरित्र गुण स्पष्ट रूप से एक फोकस हैं। अनुभाग के अंत में, धार्मिकता, न्याय और सत्यनिष्ठा के गुणों को फिर से निकट क्रम में व्यवस्थित किया जाता है।

तो, हम इसे 29, 26 में देखते हैं, जहां एक व्यक्ति जिस कानूनी न्याय की आशा करता है वह अंततः शासक के बजाय यहोवा से प्राप्त होता है। अतः न्याय प्रभु की ओर से आता है। यह विषय 29, 7 में अधिक सार्वभौमिक रूप से दिया गया है, जहां अन्याय से युक्त व्यक्ति धर्मियों के लिए घृणित है, जबकि सत्यनिष्ठा से युक्त व्यक्ति दुष्टों के लिए घृणित है।

और फिर, हम देखते हैं, जैसा कि हमने पहले अनुभागों में देखा था, इसके अंत में सुधार की आवश्यकता दिखाई देती है। हम पहले ही देख चुके हैं कि कैसे सुधार पर ध्यान पहले के कई चरणों के अंत में आता है। यहां फिर से, उस सुधार पर ध्यान केंद्रित किया गया है जो 22, 15 में सुलैमान 1 के अंत में और 24, 32 में बुद्धिमान दो के कथनों के अनुरूप कार्य करता है।

प्रत्येक प्रयोग में, यह विकासशील युवा ऋषि के लिए आत्म-अनुशासन और संयम विकसित करने की निरंतर आवश्यकता को रेखांकित करता है, जिसे सुधार किए जाने पर उस पर ध्यान देकर सुधारा जाना चाहिए। ये इन अनुभागों की अंतिम साहित्यिक सीमाओं में इस तरह से कार्य करते हैं और फिर से सुझाव देते हैं, जैसे-जैसे यह रैखिक आंदोलन आगे बढ़ता है, एक जानबूझकर व्यवस्था और फोकस होता है। फिर हम अंततः पुस्तक के अंतिम दो खंडों तक पहुँचते हैं, अगुर और लेमुएल की बातें।

आगुर के कथनों में, हमारे पास वह है जिसे मैंने रहस्यमय ज्ञान कहा है। और फिर जैसा कि हम कहावतों में देखेंगे, लमूएल की बुद्धि, हमारे पास शाही बुद्धि है। तो, ये अध्याय 30 और 31 हैं।

अंतिम दो खंड पहले के अज्ञात संतों से आगे बढ़ते हैं, जो कि बुद्धिमान हैं, जो एक चरित्र बन जाते हैं, लोगों का एक समूह जिसे युवा व्यक्ति को सोलोमन 1 में अनुसरण करना होता है। और फिर वे, वास्तव में, ज्ञान का नेतृत्व करते हैं और ज्ञान देते हैं बुद्धिमानों की बातें। अब एक आंदोलन चल

रहा है कि जो बुद्धिमान अज्ञात हैं, उनकी पहचान अब इन विदेशी संतों, अगुर और लेमुएल में की जाती है। बाहर की ओर हलचल बढ़ रही है।

मैं इसे कभी-कभी संकेंद्रित वृत्तों के रूप में देखता हूँ जो इज़राइल से परे पवित्र ज्ञान आंदोलन की परिधि की ओर बढ़ते हैं, इन संतों को चित्रित करते हैं, मैं मसाई के रूप में विश्वास करता हूँ, संभवतः गैर-इजरायल। और हम सबसे पहले अगुर से मिलते हैं, ज्ञान की खोज इन संतों के लिए थकाऊ साबित हुई है, लेकिन निराशाजनक नहीं। वे संभवतः गैर-इज़राइली हैं।

वे कुछ विशेष प्रकार के ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करते हैं। आइए मैं अगुर के शब्दों में इसकी पहली प्रविष्टि पढ़ता हूँ। वह कहता है, मनुष्य कहता है, हे परमेश्वर, मैं थक गया हूँ, हे परमेश्वर, मैं थक गया हूँ, और थक गया हूँ।

इसलिए, ज्ञान की खोज थका देने वाली रही है, लेकिन निराशाजनक नहीं। और इसलिए, ये अंतिम दो ज्ञान खंड प्रस्तावना में उल्लिखित कार्यक्रम का उपयुक्त अंत बनाते हैं। वे विनम्रता, सत्य, व्यवस्था, आत्म-अनुशासन और न्याय के गुणों पर ध्यान केंद्रित करके ऐसा करते हैं।

ये लक्षण जिन्हें टोरा के मानदंडों के रूप में आदर्श बनाया गया है, उन्हें महत्वाकांक्षी संतों में मूर्त रूप दिया जा रहा है और अब एक आदर्श ऋषि और एक आदर्श राजा में मूर्त रूप दिया जा रहा है, जो इस ज्ञान को प्रदर्शित करता है और इन लक्षणों पर ध्यान केंद्रित करता है। ये लक्षण प्रभावशाली ऋषि अगुर के साथ-साथ राजा लेमुएल के लिए भी अपने-अपने क्षेत्रों में कार्य करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। तो, यदि आप चाहें तो आदर्श पाठक पूर्ण रूप से सामने आ गया है।

एक परिष्कृत ऋषि और एक आत्म-संयमी राजा अब उभरते युवा ज्ञान साधक के उद्देश्य का प्रतीक हैं। अगुर विशेष रूप से एक निश्चित दिशा में जाता है और वह पुष्टि करता है कि भगवान ज्ञान का स्रोत है और ज्ञान मुख्य रूप से दिव्य प्रकटीकरण के माध्यम से प्राप्त होता है। वह एक पवित्र, प्रख्यात ऋषि के रूप में अपनी भूमिका में प्रारंभिक चरणों के ज्ञान को साकार करते हैं, जो ज्ञान की अपनी खोज की सीमाओं को पहचानते हैं।

वह एक विनम्र लेकिन ओजस्वी वक्ता हैं। वह 31 में सत्ता की दहलीज पर खड़े लोगों के लिए अपेक्षित गुणों के रूप में विनम्रता, आश्चर्य और निर्देश के प्रति खुलेपन का प्रतीक है, जैसा कि हम लेमुएल के साथ देखते हैं। पिछले अनुभागों की सूक्तियों को अब व्याख्यात्मक सूक्तियों और पहेलियों द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया है।

याद रखें कि प्रस्तावना प्रारंभिक कहावतों से नीतिवचनों और बुद्धिमानों की बातों तक और फिर व्याख्यात्मक सूक्तियों और पहेलियों की ओर बढ़ती है। मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि ये जटिलता के बढ़ते रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं क्योंकि युवा व्यक्ति उस बौद्धिक कठोरता को लागू करता है जिसे वह पहले से ही ब्रह्मांड में मौजूद गहरे और अधिक गहन सत्य को समझने में महारत हासिल कर चुका है, जिसे उजागर करने और खोजने की आवश्यकता है क्योंकि वह उस बौद्धिक कठोरता का उपयोग करता है। परिष्कृत तरीके से. और इसलिए, अगुर व्याख्यात्मक सूक्तियों और पहेलियों पर ध्यान केंद्रित करके इसका प्रतीक है।

अगुर के बारे में बस एक नोट, वह ज्ञान पर निश्चित शब्द का दावा नहीं करता है। वह कहता है कि वह इतना क्रूर है कि अंतिम समझ को स्वीकार नहीं कर सकता और वह स्वीकार करता है कि उसके पास बुद्धि और ज्ञान का अभाव है। अगुर के बारे में मेरे दिमाग में एक ताज़ा तत्व है क्योंकि ज्ञान ने घमंड पैदा नहीं किया है, इसने विनम्रता पैदा की है।

वह मानते हैं कि जैसे-जैसे आप ज्ञान प्राप्त करते हैं, आप वास्तव में अपनी कमजोरी, सीमाओं और ज्ञान की कमी के बारे में अधिक समझते हैं। और यदि आप कई वर्षों तक जीवित रहे हैं, तो आप संभवतः उस विचार का अनुभव या पहचान कर सकते हैं, उसके साथ प्रतिध्वनित हो सकते हैं। मैं जानता हूँ कि जैसे-जैसे मैं अधिक से अधिक चीजें सीखता हूँ, मुझे उन सभी चीजों का एहसास होने लगता है जो मैं नहीं जानता हूँ।

और इसलिए, ज्ञान की खोज का एक विनम्र पहलू है और अगुर इसे एक यादगार तरीके से प्रस्तुत करता है। उनके ज्ञान संग्रह का अंत, जैसा कि हम देखेंगे, राजत्व के मामलों पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने पर केंद्रित है। उनके पास अध्याय 30 छंद 27, 28, और 31 में राजा की प्रतिष्ठा और श्रेष्ठता पर तीन उल्लेख हैं।

और उस विनम्रता के प्रतिउत्तर के रूप में जिसकी आगुर ने शुरुआती भाषण में प्रशंसा की। इसलिए, जब वह शुरू करता है तो वह विनम्रता की सराहना करता है और फिर वह राजा पर ध्यान केंद्रित करता है क्योंकि वह अपने ज्ञान में आगे बढ़ता है और विशेष रूप से इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि राजा की किस तरह की भूमिका है। वह इसमें कुछ चीजों को निर्दिष्ट करने के लिए एक संकेतात्मक स्वर भी शामिल करता है।

और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हम इसे देखेंगे। और फिर हम लेमुएल तक पहुंचते हैं, लेमुएल की बातें, अध्याय 31 में शाही ज्ञान। लेमुएल पुस्तक के लिए एक अंतिम शाही संदर्भ प्रस्तुत करता है।

उनका प्रवचन उन्नत गद्य और यहोवा के भय से प्रतिष्ठित भक्ति को प्रस्तुत करता है। शुरुआत में यहोवा का भय प्रमुख है। इस खंड के अंत में यह फिर से प्रमुख हो जाता है।

और हमारे यहां अंतिम खंड के आरंभ में विशेष रूप से लेमुएल की मां की आवाज है। और यह प्रस्तावना में माँ की अंतर्निहित आवाज़ को संतुलित करता है। और यह पुस्तक के समापन पर महान चरित्र वाली महिला की अंतर्निहित आवाज का पूर्वाभास देता है।

इसलिए यह प्रस्तावना के प्रारंभिक परामर्श को समाप्त करता है। आदर्श बुद्धिमान पुत्र अब राजा बन गया है और वह असामान्य गुण वाली पत्नी की तलाश करते समय अपनी कुछ हद तक नाराज मां की आवाज पर ध्यान दे रहा है। और ऐसा करने में, लेमुएल ने पुस्तक को प्रस्तुत किया है, जैसा कि एक ने कहा है, नीतिवचन की पुस्तक के लिए एकदम सही परिणति है क्योंकि यह धर्मपरायणता और उत्कृष्टता के नोट पर समाप्त होती है।

तो, उनका प्रवचन राजा और समाज, अध्याय 31 श्लोक एक, तीन और चार में समाज में उनकी भूमिका के कई संदर्भों के साथ शुरू होता है। फिर भी उन्होंने चेतावनी का एक नोट भी शामिल किया है, यह निर्दिष्ट करने के लिए एक संकेतात्मक स्वर कि प्रवचन वह है जिसमें उनकी मां ने

उन्हें सही किया था। तो फिर से, हमारे पास सुधार का यह विचार है, जिसने बहुत सारे अनुभागों को तैयार किया है क्योंकि हम सात संग्रहों के प्रशिक्षण व्यवस्था के माध्यम से आगे बढ़े हैं।

ऐसा लगता है कि रास्ते में कई चरणों में, निष्कर्ष फिर से सुधार पर केंद्रित है और कैसे ज्ञान आवश्यक रूप से महत्वाकांक्षी ऋषि को सही करता है। यहां, यह निहित ताड़ना उस सुधार पर जोर की याद दिलाती है जो हमने पहले पुस्तक के इन अन्य चरणों में देखा था, जिसमें 22:15 में सुलैमान 1 का समापन, 24 में बुद्धिमानों की बातें, और सुलैमान 2 का निष्कर्ष भी शामिल है। अध्याय 29 श्लोक 17 और 19। प्रस्तावना धार्मिकता और न्याय पर केंद्रित है।

उन गुणों की प्रतिध्वनि लेमुएल की मां द्वारा उसे दिए गए निर्देश में भी मिलती है। उन्हें मजबूत पेय से परहेज करना होगा ताकि वह गरीबों के अधिकारों को कायम रखने के बारे में स्पष्ट रूप से सोच सकें। और इसलिए, उसे आत्म-संयम रखना होगा।

यह उस सुधार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। और लमूएल ने ज्ञान और प्रभु के भय के संकेत के साथ अपना प्रवचन समाप्त किया। और यह ज्ञान कार्यक्रम को एक उपयुक्त समापन प्रदान करता है।

पुस्तक ज्ञान की शुरुआत के रूप में भगवान के भय से शुरू होती है, और यह असामान्य गुण वाली महिला की प्रशंसा के साथ समाप्त होती है जो भगवान के इस भय का प्रतीक है। यह इस प्रकार कहता है, "...सुन्दरता धोखा देने वाली और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, वह प्रशंसा के योग्य है, उसके हाथों के फल में से उसे दो, और उसके कामों की प्रशंसा फाटकों में हो।" तो फिर, हम माँ की अंतर्निहित आवाज़, लमूएल की माँ की क्रोधित आवाज़ से लेकर अब उस महिला की अंतर्निहित आवाज़ तक, जो प्रभु से डरती है, पूर्ण चक्र में आ गए हैं। और इस प्रकार, ज्ञान पूर्ण चक्र में आ गया है।

मेरे पास एक चार्ट है जो लेख में भी शामिल है और फ्रॉन्ट के आकार को देखते हुए इसे देखना मुश्किल हो सकता है, लेकिन यह एक सिंहावलोकन है कि मैं कैसे सोचता हूँ कि ज्ञान की गति हमें इसकी रैखिक प्रगति और विकास को देखने में मदद करती है। इसकी शुरुआत घरेलू परिवेश में प्रस्तावना से होती है। पिता ही प्रधान ऋषि हैं।

महिला ज्ञान प्रमुख है और उचित साथियों के संबंध में अनुभवहीनता से विवेकपूर्ण निर्णय लेने की ओर एक आंदोलन है। और प्रभु का भय विषय है जो पुस्तक के उस भाग का प्रतीक है। और फिर हम सुलैमान 1 की ओर बढ़ते हैं। सुलैमान 1 एक संक्रमणकालीन सेटिंग है।

पिता राजा ही प्रधान ऋषि हैं। बुद्धिमान व्यक्ति और ज्ञानी प्रमुख हैं। और सरल से जटिल चरित्र प्रकारों की ओर और घर से समाज की ओर एक आंदोलन है। तो फिर, एक बाहरी आंदोलन।

और फिर हम बुद्धिमानों की बातों पर आते हैं। बुद्धिमानों की बातें 1, बुद्धिमानों की बातें 2। यहां हमारे पास एक शाही दरबार की व्यवस्था है और बुद्धिमानों का एक समूह या कैडर है जो प्रमुख संत हैं। वे ही ज्ञान दे रहे हैं। वे ऐसा आदेश के माध्यम से, आदेशों के माध्यम से करते हैं। विभिन्न घृणित सामाजिक चरित्र प्रकार प्रमुख हैं। सामाजिक जुड़ाव के शुरुआती चरणों से लेकर बढ़ती

जागरूकता और विवेक तक एक आंदोलन है। और फिर, इस खंड में प्रभु का भय प्रमुख हो जाता है।

फिर हम सुलैमान 2 के पास जाते हैं। सुलैमान 2 फिर से राजा और अन्य शासकों पर ध्यान केंद्रित करने वाली एक शाही अदालत है। धर्मात्मा शासक ही प्रमुख ऋषि होते हैं। शाही दरबार के अधिकारी प्रमुख हैं। शाही दरबार में प्रवेश से लेकर राजा की कमियों और धार्मिकता और न्याय की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एक आंदोलन चल रहा है।

तो फिर, धार्मिकता, न्याय और सत्यनिष्ठा के वे गुण जो ऋषि में सन्निहित होने चाहिए, वे हमेशा राजा में सन्निहित नहीं होते हैं। और इसलिए, बुद्धिमान व्यक्ति को यह सीखना है कि उस दुनिया में कैसे नेविगेट किया जाए जिसमें वह वास्तविकता है। और फिर हम आगुर और लेमुएल की बातों के साथ अपनी बात समाप्त करते हैं।

यहां हमारे पास एक विदेशी शाही दरबार है और हमारे पास अगुर के रूप में एक शाही सलाहकार और प्रमुख संतों के रूप में लेमुएल के रूप में एक धर्मी राजा हैं। यहां हमारे पास ढेर सारी पहेलियां हैं। प्रकृति और समाज के विभिन्न उदाहरण प्रमुख हैं।

जानवरों और प्राकृतिक दुनिया की चीजों पर ध्यान केंद्रित करना फोकस का हिस्सा बन जाता है। ज्ञान की सीमाओं से एक आंदोलन है, जिसे हम अगुर में पाते हैं, बुद्धिमानों के राज्याभिषेक तक, जो कि धर्मी राजा और रानी हैं, जो अब टोरा और धार्मिकता, न्याय और अखंडता के सामाजिक मानदंडों के सही प्रकार के अनुप्रयोग को अपनाते हैं। . और फिर, प्रभु का भय वह विषय है जो प्रस्तावना से प्रतिध्वनित होता है।

इसलिए, मैंने जो तर्क दिया है उसे संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए, मैंने सुझाव दिया है कि नीतिवचन की प्रस्तावना, पहले सात छंद, एक शैक्षिक कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करते हैं। इस शैक्षिक कार्यक्रम का उद्देश्य निहित पाठक, जो एक अनुभवहीन युवा है, को धार्मिकता, न्याय और अखंडता के गुणों की ओर ले जाना है, विशेष रूप से सामाजिक-राजनीतिक नेतृत्व का अभ्यास करने के उद्देश्य से। इस पाठ्यचर्या पैटर्न को इस बात से देखा गया कि कैसे सात ज्ञान संग्रहों के उद्घाटन और समापन भाग बढ़ते ज्ञान के इस विचार को आगे बढ़ाते हैं।

एक संरचनात्मक विहित पाठन, यानी, जो पुस्तक के अंतिम रूप और इसकी साहित्यिक संरचना को देखता है, जो इन सात ज्ञान संग्रहों के बीच इन साहित्यिक सीमों पर ध्यान केंद्रित करता है, यह सुराग प्रदान करता है कि एक जानबूझकर व्यवस्था है। इसमें एक गतिशील गतिविधि है जो एक जागरूक और जानबूझकर प्रशिक्षण व्यवस्था की विशेषता है। नेतृत्व प्रशिक्षण के सात पाठ्यक्रमों से गुजरते हुए, अपरिपक्व कालो नियुक्त व्यक्ति परिपक्व और मैट्रिक पास करता है क्योंकि वह अंततः सामाजिक और शाही नेतृत्व के दबावों और नुकसानों से सफलतापूर्वक निपटने के लिए तैयार होता है।

कॉलो युवा धीरे-धीरे यहोवा के श्रद्धापूर्ण भय पर आधारित धार्मिकता, न्याय और सत्यनिष्ठा के इन गुणों का उदाहरण देता है ताकि वह स्वयं एक प्रतिष्ठित ऋषि और नेता बन सके जो समाज में इन गुणों को कायम रखता है, जो टोरा का अवतार है और सच्चाई का प्रतीक है। बुद्धि। और मैं आशा

और प्रार्थना करता हूं कि नीतिवचन का हमारा अध्ययन हमें उस सच्चे ज्ञान को प्राप्त करने में भी मदद करेगा जो प्रभु को जानने और उसके साथ चलने से आता है।

यह नीतिवचन की संरचना और धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में डॉ. काइल डनहम हैं। यह सत्र 2, उन्नत ज्ञान और सामाजिक अनुप्रयोग है।